वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine | Issue 26 | Year 3 | Volume 2 | November 2014 Chandigarh | Page 24 | मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 100-see page 2

विचार

दीपक वहां जलायें जहां अन्धकार सब से अधिक हो

यदि हम दिन के समय जब सूर्य की किरणों से सब जगह प्रकाश होता है, एक छोटा दीपक जलायेंगे तो वह बिल्कुल प्रभावहीन लगेगा। परन्तु वही दीपक यदि रात्री के अन्धकार में जलाया जाये तो आसपास में प्रकाश कर सकता है और बहुत उपयोगी नजर आता है। यदि हम सुकरात, महात्मा बुध, गुरू नानक देव, **महिृषी दयानन्द सरस्वती जैसे महान** विचारकों और सुधारकों के जीवन को देखें तो महसूस करेंगे कि उन्होने ज्ञान के दीपक वहां जलाये जहां अन्धेरा था चाहे इस के लिये उन्हें कितने भी विरोध का सामना क्यों न करना पड़ा। महात्मा सुकरात और **महिृषी दयानन्द सरस्वती को तो अपने प्राणों से भी** हाथ धोने पड़े। **ज्ञान का प्रकाश पाने के बाद इन सभी महान आत्माओं के** जीवन का एक ही उदेश्य था कि अज्ञान के कारण समाजिक और धार्मिक कुरीतीयों से दुख पा रहे लोगों को ठीक रास्ता दीखाया जाये ताकी उनके दुख पीड़ा सुख में बदले और यह दुनिया बेहतर जगह बने।

यहां एक बात जो देखने वाली है वह यह है कि ये **सभी महान आत्माऐं** अगर चाहती तो ज्ञान के प्रकाश में अपने जीवन को अपने लिये आन्दकारी बना कर सुख से रहते पर उन्होने उस के स्थान पर दूसरा मुश्किल रास्ता चुना। कारण, वे दुखीयों की आंखों से आंसू पोंछकर उनके चेहरे पर मुस्कराहट लाना चाहते थे। वे नहीं चाहते थे कि आगे आने वाली सन्ताने अन्धेरे में रहें। महात्मा गांधी, मदर टरेसा, बाबा अम्बेदकर, महात्मा हंसराज, स्वामी श्रधानंद, बाबा आमटे व भक्त पूर्ण सिंह भी महान इस लिये कहलाये क्योंकि इन सब ने मुश्किलों व अपने सुखों को तलांजली देकर दीपक वहां जलाये जहां अन्धेरा था। यही बात श्री कैलाश सत्यार्थी, जिन्हे हाल में नोवेल पुरस्कार से सुशोभित किया गया के जीवन में देखने को मिलती है। अभी वह पांच साल के थे कि एक दिन उन्होने अपने पिता से प्रश्न किया––पिता जी मैं तो विद्यालय जाता हूं पर हमारे सामने

Contact: Bhartendu Sood, Editor, Publisher & Printer # 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

वाले मोची का बेटा क्यों नहीं जाता। पिता का जवाब था——बेटा उसके पास इतने पैसे नहीं कि वह अपने बेटे को स्कूल भेज सके। कैलाश सत्यार्थी, को यह बात बाण की तरह चुभ गई। क्या शिक्षा प्राप्त करने के लिये भी अमीर मां बाप के घर जन्म लेना आवश्यक है? इसी बात ने कैलाश सत्यार्थी, को लाखों उन गरीब वच्चों के लिये काम करने के लिये प्रेरित किया जो कि गरीबी के कारण इस समाज द्वारा **शोषण** के शिकार होते हैं। अर्थात उन्होने दीपक वहीं जलाया जहां अन्धेरा था और परिणाम सब के सामने है। एक आंकड़े के अनुसार उन की मोहिम ने 80000 से अधिक ऐसे बच्चों को एक सम्मान का जीवन प्रदान किया जो कि समाज के शोषण के शिकार थे।

यहां एक और समझने की बात यह है कि जैसे एक प्रकाशवान दीपक दूसरे दीपों को प्रकाशित करता है वैसे ही केवल वही व्यक्ति दूसरों को प्रकाशवान कर सकता है जो खुद ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशवान हो। सुकरात, महात्मा बुध, गुरू नानक देव, महऋि**षी दयानन्द सरस्वती** ये सभी पहले खुद सच्चाई की खोज में धूमे और भटके, महान तप किया, कई मुसीबतों से गुजरे तब उन्हे ज्ञान का प्रकाश प्राप्त हुआ। इस के लिये बहुत तप और त्याग चाहिये। कैलाश सत्यार्थी भी पढ़े लिखे इंजिनयर थे। वह भी सुख से अपना जीवन यापन कर सकते थे, पर अपने उदेश्य की प्राप्ती के लिये उन्होने मुश्किल रास्ता चुना।

स्वभाविक तौर पर मन में यह प्रश्न आता है कि कोन से ऐसे स्थान हैं जहां अन्धकार है और दीपक जलाने की आवश्यकता है। मेरे ख्याल में ऐसे स्थान वे है जहां मनुष्य **मूल मानवाधिकारों से वंचिंत है और जीवन की मूल सुविधाओं जैसे की खाने के लिये भोजन, पहनने के लिये कपड़ा, स्वास्थय सुविधाऐं, शिक्षा अपने ढंग से धर्म का पालन और अपनी संस्कृति को बचाने से वंचित है। जहां उसे अपने विचारों को बोलने की, शासन के लिये अपने प्रतिनिधी का चुनाव करने की स्वतन्त्रता नहीं है, और वह गुलामी का जीवन जीने पर मजबूर है। जहां ठीक ज्ञान के अभाव में वह रूढ़ीवाद और धर्म के नाम फिरकापरस्थी और शोषन का शिकार है।**

जहां तक हमारे देश का प्रश्न है, ऐसे स्थानों की कमी नहीं जहां अंधकार ही अंधकार है और हजारों दीपक जलाने की आवश्यकता है जैसे की कैलाश सत्यार्थी ने किया। मैं मानता हूं कि हम सभी कैलाश सत्यार्थी नहीं बन सकते क्योंकि उसके लिये जो तप और त्याग चाहिये वह सभी में नहीं होता। पर एक छोटा छोटा दीपक हम सब जला सकते है और दुसरों के जीवन को प्रकाशमय कर सकते है। पर यह भी सच्चाई है कि हम यह दीपक तभी जला सकते है अगर हम प्रकाश वाले स्थानों के स्थान पर उन स्थानों पर जाने का क**ष्ट करे, साहस करें, जहां अन्धेरा है।**

अगर हम जहां पहले से प्रकाश है वहां खानापूरती और कर्मकाण्ड के तौर पर दीपक जलाते रहेंगे तो वह साधनों का दुरप्रयोग ही है। जो आप समय, पैसा, श्रम दान दे रहें हैं उसकी समीक्षा करें और यह सुनिश्चित करें कि आपका दान अन्धेरे में दीपक जलाने के काम ही आ रहा है।

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 100 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172—2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :—
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, ICICI Bank - 659201411714, **IFC Code - ICIC0006592**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।

ईश्वर और हमारी इच्छांए

नीला सूद

हम में अधिकतर जब ईश्वर से प्रार्थना करते हैं तो अपनी इच्छाओं का पटारा प्रभु के सामने खोल देते हैं। आयु, ज़रूरत, परिस्थिती, हालात, मानसिक और शारिरिक हालत के अनुसार, हर एक की कोई न कोई खास ईच्छा होती है। उदाहरण के लिये जब सारा परिवार इकठठा मन्दिर जाता है तो यह ज़रूरी नहीं हर एक सदस्य प्रभु से एक ही चीज मांगे। हो सकता है घर का मुखिया अपने व्यापार में अच्छे मुनाफे के लिये प्रार्थना करे। बेटा परीक्षा में अच्छे नम्बरों के लिये प्रार्थना करे ताकी उसका किसी अच्छे कालेज में दाखिला हो जाये या फिर अच्छी नोकरी लग लाये। हो सकता है बेटी यह प्रार्थना करे कि उसका किसी अच्छे लड़के से रिश्ता हो जाये। यदि कोई बिमार है तो शीघ्र स्वस्थ होने के लिये प्रार्थना करता है। हां, कोई व्यक्ति जो आध्यात्मिक तौर पर बहुत उठा हुआ है, वह जो प्रार्थना करेगा आम व्यक्ति से हट कर होगी। वह अपने लिये कुछ मांगते हुये बाकियों के सुख शाति और धन बैभव की प्रार्थना भी अक्सर करता है।

पर यह सच्चाई है कि हम ईश्वर के कितने भी नजदीक हों ईश्वर हमारी सभी ईच्छाओं को पूरा नहीं करता। प्रश्न उठता है कि ईश्वर क्यों कुछ ईच्छाओं को ही पूरा करता है। उस के बारे में पुराणों की एक काल्पनिक कहानी है। एक बार ऋषि नारद कामनी नाम की अप्सरा पर मोहित हो गये और उसे हर हालत में पाने का संकलप कर लिया। नारद को अपने बारे में ऐसा लगता था कि वह सुन्दर नहीं हैं ऐसे में उन्हे डर हो गया कि अपसरा उन को ठुकरा न दे। उन्होने ईश्वर से प्रार्थना कि वह उनको सुन्दर रूप दे दे। पर ईश्वर ने नारद को सुन्दर बनाने की बजाये उसका मुंह बन्दर का बना दिया।

परिणाम यह हुआ कि नारद की उमीदों पर पानी फिर गया। नारद को ऐसा लगा कि भगवान ने उनके साथ बहुत बड़ा अन्याय किया और जान बूझ कर उसके रास्ते में कांटे पैदा कर दिये। वह क्रोद्धित होकर भगवान को ही बुरा भला कहने लगे। एक और ऋषि ने जब नारद को ऐसी हालत में देखा तो बहुत हैरान हुये और उन्होने नारद से ऐसे अनापेक्षित व्यवहार का कारण पूछा। नारद की सारी बात सुनने के बाद वह ऋषि सब समझ गये । उन्होने नारद से कहा––'' देखो तुम अपनी भक्ति से भगवान के बहुत प्रिय हो गये हो। उसे तुम्हारी भलाई तुम्हारी ईच्छा में नजर नहीं आई। भगवान कभी नहीं चाहता कि उनका प्रिय भक्त गलत रास्ते पर चला जाये। इसलिये उन्होने तुम्हें गलत रास्ते से बचाने के लिये तुम्हारा मुंह बन्दर का बना दिया''

यह सच्चाई है कि नारद की तरह ही जब हमारी ईच्छांऐं भगवान पूरी नहीं करते तो हम भी ईश्वर से कुछ क्षण के लिये नाराज हो जाते हैं। हम यह भूल जाते है कि हो सकता है कि जो हमारी इच्छा पूरी नहीं हुई, उस में हमारी कोई भलाई हों। अक्सर ईश्वर वैसे ही हमें बुरे से बचाता है जैसे कि डाक्टर दवाई देकर मरीज को बचाता है चाहे वह दवाई मरीज को कुछ समय के लिये कड़वी ही लगे।

जिनका ईश्वर में पूर्ण विश्वास होता है, वह सफलता न मिलने पर या काम न बनने पर कभी विचलित नहीं होते। उन्हें विश्वास होता है कि ईश्वर जो भी करेगा हमारी भलाई के लिये ही करेगा। यही बात उन्हें हर समय शान्त रखती है और उनका मन कभी विचलित नहीं होता।

सम्पादकिय

स्वच्छ भारत——हम अपने पड़ोसी देशों से बहुत कुछ सीख सकते है

क्हते हैं एक खूंखार आतंकी जो की **अन्तराष्टरिय गिरोह का सदस्य था, विहार** के दूर वाले इलाके में कई महीनों की तलाश के बाद पुलिस के काबू आ गया। उसे पटना शहर में न्यायधीश के सामने पेश करना आवश्यक था। **अन्तराष्टरिय गिरोह** का सदस्य होने के कारण उस का पकड़ा जाना गिरोह के नेताओं के लिये चिन्ता का **विषय बन गया।** उसे कैसे पुलिस से छुड़ाया जाये। कुछ समय बाद उसे मोवाईल पर, जो अभी तक पुलिस वालों की कृपा से उस के पास ही था आदेश मिले। आदेश क्या था, इस का पता उस समय लगा जब वह श्शौच करने गया तो बापिस ही नहीं आया और फरार हो गया। पुलिस वालों का जवाब था कि जब सारे कसवे में ही शोचालय नही ंतो कहां उसे भेजते। जी हां, जिस देश की 49.8% जनता **खुले में शौच करने जाती हो वहां अन्तराष्टरिय** गिरोह को अधिक सोचने की आवश्यकता नहीं।

यह बिल्कुल सत्य है कि आज भारत को देवालय नहीं शौचालयों की आवश्यकता है। 2011 में नेपाल सरकार ने यह निर्णय लिया था कि 2017 तक उनके देश में कोई भी खुले में शौच के लिये नहीं जायेगा और 2013 जक उन्होने 75 में से 10 तालुकाओं में यह सुनिश्चित कर दिया है। पर यह कार्य सिर्फ सरकार के प्रयत्नों से ही नहीं हो रहा इस में जनता भी भागीदार है। वहां के बच्चों ने एक रूचिकर तरीका अपनाया है, जब भी वह किसी को भी खुले में शौच करते देखते हैं तो खाली टीन पर डंडे पीट कर जोर जोर से आवाज करना शुरू कर देते हैं। जिससे की दुसरा व्यक्ति शरमिन्दा हो जाता है। वहां सफाई अभियान इस कदर सफल है कि हर एक कस्वा दुसरे कसवे से आगे निकलना चाहता है।

जापान में स्कूलों में बच्चे रोज सफाई करते हैं

इसके मुकावले भारत में जहां तक शौचालयो का सवाल है, हमारे गांवों में अभी भी तीन घरों में से एक ही घर में शौचालय

है और सब से चिन्ता वाली बात यह है कि अभी भी इसे वह महत्व नहीं दिया जा रहा जो कि देना चाहिये। यह सोच है कि शौचालय के लिये स्थान और पैसा क्यों खर्च करना जब कि खुले में जाने से काम चलता है। यहां तक कि शहरों में भी गन्दगी से परहेज नहीं, जैसा कि आप को इस घटना से पता लगेगा। मेरे घर के पास दशहरे के दिनों में किसी ने जगराता करवाया। जगराते से पहले आजकल भोजन भी होता है। यह ऐसा कोई जगराता था जिस में जगराते की ज्योति को लेकर जिसने जगराता करवाया होता है, उसे सब देवियां जैसे चिन्तपुरनी और ज्वालामुखी आदि जाना होता है। जैसे ही जगराता खत्म हुआ सारा परिवार उस ज्योति को लेकर चण्डीगढ़ से रवाना हो गया और जो खाने की जूठन डूने पतल थे वे वहीं पार्क में रहने दिये। परिवार पांच दिन बाद लौटा और तब तक वह गंद वहीं पड़ा रहा। आज हमारे देश में सब से बड़ी मुश्किल यही है कि धार्मिक भावनाओं को ठेस न लगे इस चक्कर में कोइ्र भी गन्दगी डालने वाले को छूना नहीं चाहता। वोटों के चक्कर में हम कड़े कानून नहीं बनाना चाहते। ऐसी घटनाओं में न तो पुलिस हस्ताक्षेप करना चाहती है और न हीं प्रशासन। ऐसे में गन्दगी कैसे दूर होगी। यह तो पहले जयराम रमेश और बाद में प्रधान मन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी की दाद देनी होगी जिन्होने यह कहने का साहस किया कि पहले शौचालय और बाद में देवालय।

आज सब से हैरान करने वाली बात यह है कि बंगलादेश, नेपाल और पाकीस्तान जैसे छोटे और हम से कहीं पिछड़े देश भी सफाई के मामले में हम से आगे है। आज बंगलादेश में केवल 4% घर ऐसे हैं जहां शौचालय नहीं जब कि नेपाल और पाकीस्तान में यह संख्या घट कर 25% रह गई है। अगर भारत में यह स्थिती उतनी तेजी से नहीं सुधरी है, तो उसके मुख्य कारण है पहला––यह लोगों का अन्दोलन नहीं बन पाया। दूसरा धर्म के जिस रूप को हमारे धर्म गुरूओं ने लोगों के सामने पेश किया है उस में आसपास और वातावरण की सफाई का कोई स्थान नहीं। अभी तक भी यह सोच है कि सफाई करना तो छोटी जाती के लोगों का काम है। वड़ी जाती के लोग हाथ नहीं लगायेंगे। अगर गंद पड़ा है तो पड़ा रहने दो।

ऐसे में सरकार अगर शौचालय बना भी दे तो अधिक फर्क पड़ने वाला नहीं क्योकिं अगर शौचालय गन्दे रहें उन्हें साफ न रखा जाये तो ये और भी अधिक खराब है। इसलिये सब से पहले तो हमें इस बात को समझाना है कि अगर मैं गन्दगी डालता हूं तो उसे उठाना भी मेरा ही काम है, और किसी का नहीं। दूसरा गन्दगी उठाना किसी खास वर्ग का काम नहीं, सब की जिम्मेवारी है। तीसरा धर्म के ठेकेदारों को समझना होगा कि स्वच्छता धर्म का मुख्य अंग है। जिन कर्मकाण्डों में गन्दगी फैलती हो उन्हें न करें जैसे कि सड़कों व पार्को पर लंगर लगाना। चौथा हमारी सरकार गन्दगी डालना एक जुरम करार करे। जिसकी रिपोर्ट होने पर पुलिस और प्रशासन द्वारा उचित दण्ड का प्रवधान हो।

1 जापान में स्कूलों में बच्चे अध्यापकाओं के साथ मिलकर रोज 15 मिनट सफाई करते हैं जिसमें toilets की सफाई भी शामिल है।

2 जापान में जिस किसी के पास भी कुता है वह कुते को बाहर ले जाते समय कुते का मल मूत्र उठाने के लिये थैला साथ ले कर चलता है।

3 जापान व हर developed देश में यह बात समझ ली गई है कि यदि व्यकित गंदगी निकालता या डालता है तो उठानी भी उसे ही है। Garbage bins से गन्दगी ले जाने के लिये आदमी रखे हुये हैं परन्तु उनका भी वही समाज में स्थान है जो की डाक्टर या इंजिनयर का है, उन्हें Health Engineer कहा जाता है। वे पढ़े लिखें होते हैं।

4 स्कूलो में विद्यार्थीयों के लिये सफाई के भी उतने नम्बर रखे गये हैं जितने की दूसरे किसी विषय के।

5 स्कूलो में विद्यार्थीयों को खाना खाने के बाद के बाद दांत साफ करना व अपना tooth brush sterile करना आवश्यक है।

6 स्कूलो में विद्यार्थीयों को आधा घन्टा व्यवहार कुशल होने की training दी जाती है। जिसका सीधा अर्थ है हम जो कुछ भी करे, उस से हमारे आस पास वालों की सुख शान्ति व चैन भंग न हो। मोबाइल फोन तो सब के पास है पर आपको public place में इसकी आवाज नहीं आयेगी।

प्रधानमन्त्री का अमेरिका मे हिन्दी में भाषण देना बहुत सही कदम

प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी अमेरिका यात्रा के दौरान हिन्दी में भा**षण** देकर बहुत सराहनीय कदम उठाया है। हालांकि श्री नरेन्द्र मोदी अच्छी अंग्रेजी जानते हैं और अपनी निजी गुप्तगुह में उन्होने ओवामा या दूसरे वरि**ष्ठ राजनितिज्ञों से अंग्रजी में भी बात की पर पबलिक मंच पर हिन्दी में** बोलना बहुत सही कदम है। हिन्दी में बोलकर उन्होने यह सन्देश दिया कि 120 करोड़ जनसंख्या वाले देश की अपनी सांस्कृतिक पहचान है।

यह उन हमारे रातनितिज्ञों के लिये भी एक शिक्षा है जो कि चाहे अंग्रेजी सही आती है या नहीं, अंग्रेजी में ही पवलिक मंच पर बोलते है जो कि देश के लिये गौरवमय नहीं। आजादी से पहले भारत में हिन्दी अधिकतर लोंगों को नहीं आती थी पर आज साधारण बम्बईया या यूं कहें कि हिन्दी फिल्मों में बोली जाने वाली हिन्दी को भारत देश के 90% आदमी समझ लेते हैं। ऐसे में हिन्दी में बोलना बहुत सही है। हिन्दी और भी लोंगों में प्रिय हो अगर हिन्दी प्रेमी इसकी बकालत करना छोड़ दें और संस्कृत के शब्दों के मिश्रण के साथ इसे मुश्किल न बनायें। चूहे को चूहा ही बोलें न की मूसा। हमारे आर्य समाज की पत्रिकाओं में प्रयोग की जाने वाली हिन्दी इसका उदाहरण है। पर साथ ही भारत जैसे देश में जहां बहुत सारी भा**षाओं के लोग रहते हैं,** हिन्दी के प्रयोग को रा**ष्टवाद से जोड़ना भी बहुत गलत है।हर एक प्रान्त के लोगों को अपनी भाषा प्यारी है और वह उस पर गर्व महसूस करता है। हिन्दी जानना एक बात है और हिन्दी के प्रभुत्व को स्थापित करना दूसरी बात है जिसका दूसरी भाषाओं वाले सदैव विरोद्ध करेगें और जिस कारण हिन्दी के मशहूर होने में बाधा आयेगी। इसलिये अच्छा हो हम हिन्दी को स्वाभाविक रूप से फैलने दें। इस में सब से मुख्य काम भारतीय हिन्दी सिनेमा जगत कर रहा है। जितना अधिक सिनेमा फैलेगा उतना ही हिन्दी फैलेगी, जैसा की हो भी रहा है। प्रधानमन्त्री बधाई के पात्र हैं।**

अभी हाल मे हम मिस्र Egypt गये थे, हमारी हैरानगी की कोई सीमा न थी जब वहां के मुसलमान लोग हमें हाथ जोड़ कर नमस्ते कर रहे थे। बात करने पर पता लगा कि वहां भारतीय सिनेमा बहुत मशहूर है और उन्ही को देखकर वे नमस्ते करना सीख गये है। एक कालेज की कन्या ने तो झुक कर मेरी पत्नि के पैरों को छूआ और पूछा कि क्या उसका नाम लक्ष्मी है। यह सच्चाई है कि भारतीय सिनेमा हिन्दी और भारतीय सभ्यता के प्रचार में बहुत महान काम कर रहा है।

Swami Daynand was the first and last Arya Samajist

Lalit Mohan

When Swami Dayanand Saraswati, the founder of Arya Samaj, breathed his last on Oct 30, 1883, with him may also have died the last Arya Samajist.

The seed of the Hindu reform movement of the 19th century was planted when on a Shivratri night a young boy, Mool Shanker, as he was known then, saw a mouse scampering up and down a Shiva idol, helping himself to the food offerings. This made him question the idea of an omnipotent God living within the idol.

Arya Samaj, which spread all over north India, had two principal thrusts: it challenged the veracity of orthodox religious beliefs and practices, and it pushed for social reform.

The latter crusade helped push legislation against the caste system, child marriage, priesthood and a host of other evils, and for women's rights. The vast network of educational institutions set up by Arya Samaj is a continuation of the campaign started by the saint.

However, the other aspect, which is to question prevailing religious beliefs and practices, has been abandoned. The Swami had the intelligence and courage to do so. But his followers have not only given up the quest but have have taken to certain rituals more vigorously than before for their vested interest and in the process Arya samaj which the great saint had established is already in oblivion. .And this even though the essence of the Gayatri Mantra, the principal prayer of all Arya Samajists, is: let the cosmic light illumine our intellect. The light can shine through only if the mind is open.

If they are true to the spirit of his teachings, then they should question the Swami's thoughts. The saint believed that the Vedas were the source of all knowledge and found in them all that he needed to condemn the Hindu religious customs of his times. But are the Vedas and Upanishads infallible? Should members of the Arya Samaj not critically evaluate what is written in them? Even these texts, despite their attempt at systematically analyzing the universe, start with certain assumptions.

To the extent that no follower of his has taken the Swami's spiritual quest forward in terms of questioning the tenets of the faith bequeathed to them, Dayanand Saraswati can be called the last Arya Samajist.

REMEMBRANCE

Oh Mother, I still feel protected by your love and affection. Your lofty ideals give me strength when I am shattered, keep me humble in success and save me from becoming inhuman amidst provocations.

Deeply remembered by Bhartendu Sood and family. # 231, Sector-45-A, Chandigarh-160047. 0172-2662870,9217970381

स्वर्गीय:
श्रीमती शारदा देवी सूद
1930—1990

सुविधा नहीं, कर्म ही है जीवन का वास्तविक आधार

सीता राम गुप्ता

आकाश में घने बादल छाए हुए थे। रिमझिम–रिमझिम बूँदे पड़ पड़ रही थीं। ऐसे में जंगल में एक मोर आनंदित होकर नृत्य कर रहा था। उसके ख़ूबसूरत पंख इंद्रधनुशी छटा बिखेर रहे थे। वहाँ से गुज़रने वाला एक व्यक्ति रुक कर यह सुंदर दृश्य देखने लगा। तभी अचानक मोर की नज़र उस व्यक्ति पर पड़ी। उस व्यक्ति के हाथ में एक थैला था। मोर ने पूछा कि तुम कहाँ जा रहे हो और तुम्हारे हाथ में ये क्या है? व्यक्ति ने कहा कि मैं बाज़ार जा रहा हूँ और मेरे हाथ में जो थैला है उसमें अनाज भरा हुआ है। मैं ये अनाज बेचकर एक सुंदर सा पंख ख़रीद कर लाऊँगा और उससे अपना घर सजाऊँगा। यह सुनकर मोर बोला, ''देखो मेरे पंख भी बहुत सुंदर हैं। मुझे खाने की तलाश में दिन भर इधर–उधर भटकना पड़ता है। यदि तुम मुझे अनाज दे दो तो मैं तुम्हें अपना ख़ूबसूरत पंख दे दूँगा।'' व्यक्ति को ये सौदा पसंद आया। उसने अनाज मोर को दे दिया और पंख लेकर ख़ुशी–ख़ुशी अपने घर चला गया।

अब तो वह व्यक्ति रोज–रोज़ ही अनाज लेकर मोर के पास आता और अनाज के बदले में पंख लेकर ख़ुशी–ख़ुशी अपने घर चला जाता। मोर भी बहुत ख़ुश रहने लगा। अब उसे खाने की तलाश में दिन भर इधर–उधर नहीं भटकना पड़ता था। दिन भर अपनी चोंच से अनाज के दाने चुगता रहता और आराम से पड़ा रहता। धीरे–धीरे उसके पंख कम होने लगे और एक दिन वो भी आया जब उसके सारे पंख ही समाप्त हो गए। जब पंख समाप्त हो गए तो उस व्यक्ति ने अनाज लेकर आना भी छोड़ दिया। एक दिन मोर का भी सारा अनाज समाप्त हो गया जो उस व्यक्ति द्वारा दिया गया था। अब मोर को भूख लगी तो उसने फैसला किया कि कहीं आसपास जाकर दाना–दुनका जुटाता हूँ। मोर ने उड़ने का प्रयास किया लेकिन वो तो उड़ ही नहीं पा रहा था। उड़े भी तो कैसे? अब उसके पास एक पंख भी तो नहीं बचा था। उसने अपने शरीर पर एक नज़र डाली तो पाया कि पंखों के बिना वह कितना बदसूरत लग रहा है। एक ही जगह पड़े–पड़े और आराम से सारे दिन खाते रहने की वजह से उसका शरीर भी भारी और थुलथुल हो गया था।

मोर ने घर बैठे दानों के लालच में अपनी सुंदरता ही नहीं अपनी उड़ने की क्षमता को भी बेच दिया था और साथ ही अपनी चंचलता व कर्मशीलता से भी हाथ धो बैठा था। वह प्रायः भूखा–प्यासा पड़ा रहता। उसका नाच भी बंद हो गया था क्योंकि न तो उसके पास पंख ही थे ओर न नाचने की शक्ति ही उसमें शेष बची थी। अपनी इस स्थिति के कारण वह बहुत दुखी रहने लगा। अपमान, अभाव व अशक्तता के कारण जल्दी ही वह मौत के मुख में समा गया। उसके साथ ऐसा क्यों हुआ? उसके साथ ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उसने कर्म करना छोड़ दिया था। मोर की सुंदरता व उसके जीवन का आधार उसके पंखो व उसके नृत्य में है, आरामपरस्ती में नहीं। मनुष्य ही नहीं हर प्राणी के लिए कर्म करना अनिवार्य है। जब भी हम अपना स्वाभाविक कर्म व कर्तव्य का पालन करना छोड़ देते हैं हमारी दुर्गति ही होती है। हम इतने बड़े व्यापारी न बनें कि अपना सौंदर्य, अपनी कला, अपनी योग्यता अथवा अपनी नैतिकता ही किसी लालच के वशीभूत होकर खो बैठें। कर्म व कलाओं के श्रेश्ठ प्रदर्शन द्वारा हम न केवल आसानी से अपनी आजीविका ही कमा सकते हैं अपितु स्वस्थ और रोगमुक्त भी बने रहते हैं।

किसी की मदद करना नहीं, उसका ढिंढोरा पीटना बुरी बात है

सीता राम गुप्ता

नेक काम करना अथवा किसी की मदद करना बहुत अच्छी बात हैं लेकिन कहा गया है कि नेकी कर दरिया में डाल। इसका अर्थ यही है कि नेक काम करके उसे भूल जाओ। इसके कई निहितार्थ हो सकते हैं। पहला तो ये कि नेक काम करके उसको जताना अहंकार का प्रदर्शन करना ही है। इसीलिए अहंकार अथवा कर्ता भाव से बचने के लिए अच्छा काम करने के बाद बार–बार उसका बखान करना उचित नहीं। ये भी कहा जाता है कि यदि एक हाथ से दान दे रहे हो तो दूसरे हाथ को भी पता नहीं लगना चाहिए। यदि आप किसी की कुछ मदद कर रहे हो अथवा दान दे रहे हो तो ये कार्य अत्यंत गोपनीयता से ही करना चाहिए क्योंकि अत्यधिक प्रदर्शन से दान लेने वाले के स्वाभिमान को ठेस पहुँच सकती है। यहाँ एक दम अकर्मण्य लोगों व भिखारियों की बात नहीं हो रही है। यही कारण है कि लोग प्रायः परिचितों की मदद करने अथवा उन्हें दान देने की बजाय अपरिचितों को ही दान देना पसंद करते हैं। यही कारण है कि आज देश में दान लेने वाले अपरिचित लोगों अथवा भिखारियों की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। पहले दान देना एक सात्विक कर्म था लेकिन आज दान लेना अथवा भीख माँगना एक पेशा बन गया है और दान देना या मदद करना आडंबरपूर्ण हो चुका है।

मदद लेने वाले से मदद करने वाला बड़ा समझा जाता है। इसका सीधा सा अर्थ है कि जिसके साथ भलाई की जाती है अथवा जिसे दान दिया जाता है वह इस अहसास से दब जाता है कि किसी ने उसकी मदद की है अथवा उस पर किसी का कर्ज हो गया है और अब ज़िंदगी भर उसे व उसके परिवार को दान देने वाले अथवा मदद करने वाले व उसके परिवार के सामने सर उठाने की हिम्मत नहीं हो सकेगी। इस वजह से वह दुखी होकर छटपटाता है। इसीलिए जो स्वाभिमानी व्यक्ति होते हैं वो विशम से विशम परिस्थितियों में भी प्रायः किसी की मदद स्वीकार नहीं करते। हाँ किसी से उधार या क़र्ज़ लेना अलग बात है।

इसके विपरीत जो लोग आसानी से किसी की मदद या दान ले लेते हैं वे उन लोगों से कमतर माने जाते हैं जो दान नहीं लेते। ऐसे लोगों का आचरण भी विचित्र होता है। लगता है वे दान लेने में भी जैसे अहसान कर रह हों। आज दान लेने वाले प्रफेशनल लोग उलटा देने वाले पर अहसान जताते हैं कि हमारे दान लेने की वजह से ही उन्हें पुण्य मिल सकेगा। सामान्य लोग भी दान देने वाले अथवा मददगार के अहसान से बचने के लिए तोड़ ढूँढ ही निकालते हैं। ऐसे लोग दानदाता अथवा मददगार में कमियाँ ढूँढने का प्रयास करते हैं। यदि व्यक्ति आर्थिक रूप से सुदृढ़ है तो उसके व्यापार या व्यवसाय को घटिया साबित करने का प्रयास करते हैं अथवा उसमें व उसके परिवार में चारित्रिक दोश निकालने लगते हैं। उनके घर, परिवार अथवा खानदान को घटिया साबित करने का प्रयास करते हैं। उनकी हर बात में कमी निकालने व हर बात के लिए उनका विरोध करना प्रारंभ कर देते हैं।

कई लोग प्रत्यक्ष रूप से तो किसी की मदद कर देते हैं लेकिन बाद में कहते फिरते हैं कि हमने तो क़र्ज़ दिया था जिसे अब वो लौटा नहीं रहे हैं। उपहार भी देते हैं तो ऐसे जैसे भीख दे रहे हों। कई लोग जिन मित्रों अथवा रिश्तेदारों की मदद करते हैं अथवा जिन्हें क़र्ज़ के तौर पर ही कुछ राशि वग़ैरा देते हैं अन्य मित्रों व रिश्तेदारों के समक्ष उनकी उपेक्षा ओर अपमान करने से नहीं चूकते जो कि ग़लत बात है। यदि आपमें किसी की किसी भी प्रकार से मदद करने की सामर्थ्य है तो मदद करने के बाद धैर्य, शालीनता और संबंधों की गरिमा को बनाए रखना भी अनिवार्य है। याद रखें कि किसी की मदद करने के बाद उससे मिलने वाली ख़ुशी ही उस मदद की सबसे बड़ी क़ीमत है इसके बिना समाज नहीं चल सकता लेकिन इसके दुश्प्रभावों से बचने के लिए हमें चाहिए कि अच्छा काम करके उसे भूल जाएँ।

ए.डी. 106–सी, पीतम पुरा, दिल्ली–110034
फोन नं – 09555622323

Receiving good luck and supplying ill luck

Bhartendu Sood

I happen to live in a country where majority of the people believe that there are certain animate and inanimate things which are inauspicious in the sense that they impart bad luck. Man over the years has divided animals, birds and even his friends, colleagues and relations in the two categories. One, who are the source of good luck and the others who are the imparter of bad luck, though there is no scientific or dogmatic base of such categorization and unfortunate part is that those who are perceived as the source of bad luck, for no fault of theirs, are kept at a distance and are quite often subjected to disdainful glare and gestures. This behaviour is confined not only to illiterate but even the highly educated and holding high positions practice such unfounded beliefs, most of the time inherited or supplied by these godmen and sorcerers? But, while practicing this, they conveniently forget that as they consider the selected ones as the source of bad luck, likewise they themselves are in the category of the ones who are perceived as the source of bad luck by others, to be best avoided or even looked down upon with contempt, as this small apocryphal story reveals.

A servant in King Akbar's palace had the reputation of bringing ill-luck to whoever met him face to face, first thing in the morning. One day, Akbar saw him as soon as he got up. Thereafter everything seemed to go wrong. His grandson fell ill, there were rumours of rebellion and the king injured himself rather badly. Enraged, Akbar ordered that the man be hanged. On hearing this, the servant came to Birbal for help. Birbal went to the king and requested for a fair trail before execution, which Akbar granted.

'Your Majesty,' he told the King, 'Did you see this man the first thing in the morning?' 'I did,' answered the King. He now turned to the servant and asked, 'Whose face did you see the first thing in the morning?'

Tremblingly he answered, 'His Majesty's.' Birbal then said, 'Your Majesty, you saw the servant the first thing in the morning and suffered minor mishaps. But this man, who is now near gallows, saw your face as the first thing. Which is the bigger misfortune?'

Akbar realized his mistake and repealed the sentence. I think we all need to give a thought as Akbar did and should look at every body as a friend, a source of perennial happiness.

(Abhorence for such unfounded beliefs and not to practice these in life is all that makes a man Arya Samajist, not mearely performing havan and chanting mantras in Sanskrit. And even if you perform havan but practice such absurd beliefs, you are not Arya Samajists)

अगर आपको कुछ कहना है या पत्रिका subscribe करनी है
कृप्या निम्न address पर सम्पर्क करें
भारतेन्दु सूद, 231 सैक्टर– 45-A, चण्डीगड़.160047
0172.2662870, 9217970381, E mail : bhartsood@yahoo.co.in

पत्रिका में दिये गये विचारो के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।

संस्कृति को भाषा से अलग नहीं किया जा सकता

कृष्णचन्द्र गर्ग

आप जो भाषा जानते हैं उसी भाषा का साहित्य आप पढ़ेंगे। जो साहित्य आप पढ़ेंगे उसी में वर्णित सभ्यता और संस्कृति को आप जान पाएंगे और अन्त में उसी को अपनाएंगे। उसी भाषा में तथा उसी संस्कृति के हिसाब से आप अपने बच्चों के नाम रखेंगे। उर्दू, अरबी, फारसी, हिन्दी, संस्कृत, पंजाबी, अंग्रेजी भाषाओं को पढ़ने वालों के उदाहरण हम सबके सामने हैं। मैं सिरफ इन भाषाओं को ही ले रहा हूँ क्योंकि हम लोग इन्हीं भाषा भाषियों के बीच में रह रहे हैं।

हिन्दी और संस्कृत पढ़ने वाले वेद के आदेश 'मनुर्भव - मनुष्य बनो' की बात करते हैं और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः - सभी सुखी हों' की कामना करते हैं। उर्दू पढ़ने वाले गालिब के निराशापूर्ण शेयर और दूसरे उर्दू के कवियों की इश्किया शेयरो-शायरी करते देखे जाते हैं। वे शराब और मयखाने की बात पर मस्ती से झूमने लगते हैं। पंजाबी वाले पंजाब, पंजाबी और पंजाबियत की बात करते हैं।

भाषाओं का सम्बन्ध सम्प्रदायों से भी है। उर्दू, अरबी, फारसी मुस्लमानों की भाषा है। पंजाबी सिखों की भाषा है। अंग्रेजी अंग्रेजों की भाषा है। हिन्दी, संस्कृत हिन्दुओं और आर्यों की भाषा है।

जो पुस्तक जिस भाषा में लिखी गई है उसे उसी भाषा में पढ़ने से ही उसके आशय को पूरी तरह समझा जा सकता है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश हिन्दी भाषा में लिखा है। उसके अंग्रेजी अनुवाद **'LIGHT OF TRUTH'** को पढ़ने वाला व्यक्ति सत्यार्थप्रकाश की वास्तविक भावना और विषयों को उतनी गहराई से नहीं पकड़ पाता जितना कि हिन्दी में सत्यार्थप्रकाश को पढ़ने वाला व्यक्ति जान पाता है।

संस्कृत भाषा में वेद, उपनिषद, मनुस्मृति, विदुरनीति आदि वैदिक साहित्य संसार के सभी साहित्यों में सर्वोत्तम है। उस सारे साहित्य के मर्म को जानने के लिए संस्कृत भाषा का जानना परम आवश्यक है। हिन्दी भाषा से कुछ काम चलाया जा सकता है क्योंकि हिन्दी भाषा की लिपि वही है जो संस्कृत की है और हिन्दी भाषा में बहुत से शब्द संस्कृत भाषा से ही लिए गए हैं।

हम वैदिक धर्मी मतों के पुजारी नहीं हैं। हम मानवतावादी हैं और मानवता के पुजारी हैं। हमें देखना है कि विज्ञानसम्मत, तर्कपूर्ण, बुद्धिपूर्वक, प्रकृति के अनुकूल और मानवतावादी साहित्य किस भाषा में है। फिर उस भाषा को जानना हमारा कर्त्तव्य बन जाता है। वह भाषा संस्कृत ही है। हिन्दी और संस्कृत के सिवाए अन्य भाषाएं आवश्यकता और इच्छानुसार पढ़ी-पढ़ाई जा सकती हैं, परन्तु संस्कृत भाषा के महत्त्व को कम करके आंकना सरासर गलत है।

अगस्त 2014 की **'VEDIC THOUGHTS'** पत्रिका में इस विषय पर लाला लाजपत राय तथा महात्मा अनन्द स्वामी के कुछ शब्द छपे हैं। उन पर विचार करना भी जरूरी हो जाता है। लाला लाजपत राय के शब्द छपे हैं - 'स्वामी दयानन्द को जिन लोगों ने समझा वे इंग्लिश जानने वाले थे। संस्कृत जानने वाले तो उनके हर पल विरोधी थे।' मैं समझता हूँ कि इसका कारण संस्कृत भाषा नहीं, अपितु संस्कृत भाषा में जो पुराण आदि अवैदिक पुस्तकें वे पढ़ते हैं, वे थीं। पुराण तर्कहीन, अनर्गल, बेतुका, अमानवीय और गलत बातों से भरे पड़े हैं। ऐसी पुस्तकों को पढ़ने वाले व्यक्ति भला महर्षि दयानन्द की तर्कपूर्ण वेदसम्मत बातों को कैसे स्वीकार कर सकते थे।

दूसरी बात - महात्मा आनन्द स्वामी के शब्द - 'हिन्दी रक्षा आन्दोलन के बाद इमानदारी से मैंने एक बात जो समझी वह थी कि आर्य समाज का भाषा से कोई सम्बन्ध नहीं। भाषा पर अपनी शक्ति खर्च करने की बजाय प्रचार में शक्ति खर्चें।' इसके उत्तर में — पंजाब के 1957 के हिन्दी सत्याग्रह से मैं भी जुड़ा रहा हूँ। महात्मा आनन्द स्वामी जी के ये शब्द आज तक मेरे सुनने या पढ़ने में कभी नहीं आए थे। इसलिए महात्मा आनन्द स्वामी जी पर कोई भी टिप्पणी न करते हुए मैं इन शब्दों को लेता हूँ 'आर्य समाज का भाषा से कोई सम्बन्ध नहीं।' मैं इन शब्दों से पूरी तरह असहमत हूँ। महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित आर्य समाज का सारा साहित्य हिन्दी या संस्कृत भाषा में है। क्या हम महर्षि दयानन्द की लेखनी को पढ़ने के लिए दूसरी भाषाओं का सहारा लेंगे? और भी, 1970 में पंजाब में जब सभी शिक्षण संस्थाओं में पंजाबी भाषा को अनिवार्य रूप से शिक्षा का माध्यम घोषित कर दिया गया था तब डी. ए.वी. संस्था ने सर्वोच्च न्यायालय में उस आदेश के खिलाफ अपील की थी कि आर्य समाज की भाषा हिन्दी है और पंजाब में आर्य समाजी भाषायी अल्पसंख्यक हैं। अतः उन्हें हिन्दी भाषा को शिक्षा का माध्यम रखने की छूट हो। सर्वोच्च न्यायालय ने इस तर्क को स्वीकार किया था और 5 मई 1971 को निर्णय दे दिया था।

831 सैक्टर 10, पंचकूला, हरियाणा, 0172-4010679

सम्पादक गर्ग साहब के विचारों से सहमत नहीं हैं। उदाहरण के लिये पंजाबी केवल सिक्खों की **भाषा** नहीं, हिन्दुओं और मुसलमानों द्वारा भी बोली जाती हैं। पाकीस्तान में खास कर पंजाब प्रान्त में पंजाबी बोलने वाले मुसलमानों की संख्या भारतीय सिक्खों और हिन्दुओं से कहीं अधिक है। इसी तरह विश्व के करोड़ो मुसलमान उर्दू, अरबी, फारसी, नहीं जानते वे अपने उस देश और प्रान्त की भा**षा में ही कुरान पढ़ते हैं। यह तो हमी हैं** जिन्होने अपने धर्म को भा**षा से जोड़ दिया तभी तो सिकुड़ कर रह गये।**

बिना शारिरिक परिश्रम के शिक्षा अधूरी है

अशोक कुमार

एक नवयुवक अपनी शिक्षा में बहुत अच्छे अंक लेकर उतीर्ण हुआ। उसे एक बहुत अच्छी कम्पनी से नौकरी के लिये नयोता आया। नवयुवक को जब उस कम्पनी के मालिक के पास पेश किया गया तो मालिक ने उस से पूछा––'' क्या मैं जान सकता हूं कि आप की शिक्षा के लिये पैसे किस ने दिये'' नवयुवक को ऐसे प्रश्न की अपेक्षा नहीं थी, उस ने कुछ सोच कर जबाव दिया––'' श्रीमान, मेरी शिक्षा का सारा भार मेरी मां ने उठाया क्योंकि मेरे पिता की मृत्यु मेरे जन्म के कुछ समय बाद ही हो गई थी।

मालिक ने कुछ सोचा और फिर प्रश्न किया––'' आपके माता जी क्या करते हैं?''

''मेरे माता जी घर में ही सारे मुहल्ले वालों के कपड़े धोते हैं और इस्त्री भी करते है।'' नवयुवक ने उतर में कहा।

मालिक ने नवयुवक के चेहरे की तरफ देखा और बोला,––'' तब तो आपको कपड़े धोने के बारे में अच्छा ज्ञान होगा ?''

नवयुवक कुछ परेशानी में दिखा पर फिर उसने सत्य बोलना ही ठीक समझा––'' श्रीमान, सच्चाई यह है कि मैने कभी कपड़े नहीं धोये क्योंकि मेरी मां यह चाहती थी कि मैं अपना सारा समय पढ़ाई के लिये ही दूं।

संस्था के मालिक ने उसका जबाव सुनकर उस से कहा––'' मैं सोचता हूं कि अच्छा होगा हम एक सप्ताह बाद फिर मिलें पर मैं चाहूंगा कि इन सात दिनों में तुम अपनी मों के साथ उसके काम कें हाथ बंटवाओं।

नवयुवक को ऐसा लगा कि उसको नौकरी मिलना लगभग निश्चित है इसलिये वह तुरन्त घर गया और मां से बोला कि वह आज से उसके काम में हाथ बंटवायेगा। अभी उसने कुछ कपड़े ही धोये थे कि उसने देखा कि उसके हाथों में कुछ खुरदरापन आ गया है। जिज्ञासावश वह अपनी मां के पास गया और उसके हाथ देखने लगा। उसकी आंखों में अश्रुधारा वह निकली जब उसने देखा कि उसकी मां के हाथों में न केवल गहरी झुरियां थी बल्की गहरे घाव भी हो गये थे। बाकी दिनों में वह मां का न केवल हांथ बंटाया वल्की अधिक काम वही करता। यही नहीं दोनों आपस में परिवार के बारे में अपने पिछले जीवन के बारे में लम्बे समय तक बातें करते।

निश्चित दिन वह संस्था के मालिक के पास इन्टरवयु के लिये पहुंच गया। संस्था के मालिक ने उससे उसके पिछले सात दिन के अनुभव के बारे में पूछा। नवयुवक ने कहा––श्रीमान जो मैने पिछले सात दिनों में सीखा वह मैने पिछले 16 सालों में भी नहीं सीखा। पहली चीज जो मैने सीखी वह है कि जिसने हमारे लिये कुछ किया हो उसका आभारी होना। आज मैं आपके सामने उस नौकरी के लिये आया हूं इसका श्रेय मेरी मां को ही जाता है। उसके बिना यह सम्भव नहीं था। दूसरा जब हम स्वयं अपने हाथ मिटटी से खराब करते हैं तभी हमें यह अहसास होता है कि कैसे कोई ईमारत खड़ी की जाती है या सड़क और पुल बनाया जाता है। तभी हम मजदूर के खून पसीने की कदर कर सकते है। तीसरा जब हम मिल कर काम करते हैं तो एक दूसरे की समस्याओं का पता लगता है, एक दूसरे को समझ पाते है। अगर मैने अपनी मां के साथ काम न किया होता तो शायद जीवन भर मुझे जो उसने कष्ट झेले हैं उनका एहसास न होता। काम करते हुये ही एक दूसरे से बात करने का मौका मिला बौर मुझे अपनी मां के कष्टमय जीवन का पता लगा।

चाहे आप धन की दृष्टि से कितने भी अमीर हैं अपने बच्चें को अपने साथ काम में लगाये। हर एक काम नौकर करे यह ठीक नहीं। कम से कम वह अपने कपड़े खुद धोये, अपना बिस्तर खुद विछाये। इसका जितना लाभ जीवन में होता है उतना और किसी चीज का नहीं।

उप-आबकारी और कर कमीशनर, सेवा निवृतद्ध, पंजाब।
फोन न. - 9878922336

सुख दुखः का कारण – लगाव

उर्वशी गोयल

लोगों में यह आम धारणा पाई जाती है कि वैराग्य का तात्पर्य एक कार्यशील जीवन से अलग होकर जीवन में भौतिक सुख देने वाली सभी वस्तुओं का त्याग है । परन्तु यह धारणा सत्य से कोसों दूर है। भौतिक सुख एक साधारण व्यक्ति के लिये बहुत आवश्यक हैं। वैराग्य की प्रवृति तो जीवन को कार्यशील रखते हुयें भौतिक सुख को भोगते हुये भी बनाई जा सकती है। साथ ही यह भी ज़रूरी नहीं कि जिसने सब कुछ त्याग दिया है, वह सही मायने में वैरागी बन गया है। हो सकता है उसका मन आम व्यक्ति की तरह मोह, राग व द्वेश से लिप्त हो।

वैराग्य का मतलब संसार के प्रति उदासीनता बिल्कुल नहीं है। उदासीनता का अर्थ तो यह है कि हम अपने माता–पिता, बच्चों, समाज, देश, सगे सम्बन्धियों व प्रकृति के प्रति अपने कर्तव्यों से विमुख हों जायें। ऐसा वैराग्य किस काम का जो कि एक जीवित व्यक्ति को मृतक के समान बना दे। व्यक्ति केवल सांस लेने या पेट भरने के लिये ही तो नहीं जी रहा है। जीवन तभी जीवन है यदि हम दूसरे प्राणियों के साथ, एक दूसरे की आवश्यकताओं को पूरा करते हुये, एक दूसरे के सुख–दुख बांटते हुये जीयें। सही अर्थो में वैराग्य योग द्वारा मन की वृतियों का निरोध अर्थात् नियन्त्रण करना है। योगश्चित्तवृतिनिरोधः, इस योग दर्शन के सूत्र के अनुसार जब आप अपने को चित की वृतियों से अलग कर लेते हैं तो अपने स्वरूप में स्थित हो जाते हैं, यही वैराग्य है। यह चित्त की वृतियां आप सब के साथ रहते हुए भी नियन्त्रण में कर सकते हो। उदाहरण के लिये मैने यह निश्चय कर लिया कि सिर्फ एक समय खाना खाऊंगी या दो घटें मौन धारण करूंगी, यह सब तो समाज में रहते हुये भी कर सकते हैं। महात्मा गांधी स्वतन्त्रता संग्राम के इतने बड़े अन्दोलन का नेतृत्व करते हुये भी यह सब कर रहे थे। **महर्षि** दयानंद सरस्वती योगी के रूप में समाज मे नवचेतना का कार्य करते रहे। इसलिये वैराग्य का मतलब संसार के प्रति उदासीनता बिल्कुल नहीं है।

गुरू ग्रंथ साहब में आता हैः

नानक सतिगुरी भेटिए पूरी होवे जुगकत।
हसदिआं खेलंदिआ पैनदिआ
खावंदिआ विच होवे मुकति।।

इस संसार में अपने–अपने कर्तव्य को करते हुये ही मनुष्य मोक्ष के द्वार तक पहुचं सकता है। उसे संसार से अलग होने की ज़रूरत नहीं।

सही मायने में वैरागी वही है जिस कां मन स्थिर हो गया है अर्थात् जब मन सफलता– असफला, मान–अपमान, लाभ–हानि व सुख–दुखः में एक जैसा रहें। न तो सफलता में बहुत खुश हो और न ही असफलता में दुखी, वह हर हाल में अपना मांनसिक संतुलन बनाये रखने में सक्षम हो गया है। किसी व्यकित या वस्तु से लगाव ही हमारे दुखः का कारण बनता है।

एक वृद्ध औरत अमृतसर में पुराने भीड़ वाले शहर में रहती थी। पति का देहान्त हो गया था व बेटा ही व्यापार को देखता था। देखते ही देखते बेटे के बच्चे भी बड़े ही गये व बड़ी कक्षाओं में पढ़ रहे थे। मकान छोटा पड़ने लगा। बेटे ने वह मकान बेचकर नई आबादी में बड़ा मकान लेने का मन बनाया। जब मां को पता लगा तब उसके दुखः की कोई सीमा न थी। वह सोच भी न सकती थी कि जिस मकान में उसने 50 वर्ष काटे थे, वह उसके लिये बेगाना हो जायेगा। वह बीमार पड़ गई। बेटे ने जब मां की हालत को देखा तो अपना निर्णय बदलना ही उचित समझा परन्तु मां की हालत में फर्क न पड़ा। एक दिन एक हम उमर सहेली उसकी बीमारी के बारे में सुनकर उससे मिलने आई। सहेली को बात समझने में देर न लगी। सहेली ने उससे पूछा कि जब उसके पति का मृत्यु हुई थी तो उनकी क्या आयु थी? उसने कहा कि यही कोई 70 साल। फिर

उसने प्रश्न किया कि जब उसके सास ससुर की मृत्यु हुई थी तो उनकी आयु क्या थी, उसने फिर जवाब दिया यही कोई 70–75 साल के करीब। अब उसकी सहेली बोली, ''देख लाजवन्ती, जिन्होंने यह मकान बनाया था वे भी यहीं छोड़कर चले गये तो एक बात पक्की है। जब आजकल में तेरी आखें बन्द होगी तब तू भी इस मकान को यहीं छोड़ जायेगी। फिर काहे को इसके साथ इतना लगाव करना। मुझे ही देख, पांच साल पहले तेरे सामने ही मकान बेच कर नई आवादी में चली गई थी, पहले कुछ अटपटा लगा पर बाद मे सब कुछ पहले की अपेक्षा अच्छा लगने लगा। खुला मकान है, साफ हवा पानी, मैं बहुत खुश हूं। कल ही बड़े लड़के का फोन कैनेडा से आया था कि सब काम हो गया है, अब उसके पास कुछ समय रह कर आऊंगी। न जाने फिर कब मानव का चोला मिले। किसी चीज से भी लगाव क्यों करना?

सहेली की बात उस वृद्धा को समझ में आ गई और एक हफ्ते में ही तंदरूस्त हो गई व उसने स्वयं लड़के से नई आवादी में चलने को कहा। ऐसा है वस्तु से लगाव का दुखः। और जब हम लगाव से स्वतन्त्र हो गये तो लाजवन्ती की सहेली की तरह सुख ही सुख है।

एक और बात, लगाव के साथ ही अधिकार के भाव का उदय होना है। मेरा घर, मेरा परिवार तथा मेरे धन की भावना दृढ़ होने लगती है। इस प्रकार के अधिकार की भावना हमारे अन्दर अहंकार को पैदा करती है। यह अहंकार फिर आपके विचारों, कार्यो व इच्छाओं को प्रभावित करता है। उस के बाद स्वाभाविक तौर पर इन सभी वस्तुओं को जिन्हें मेरा–मेरा कहते जीभ नहीं थकती, खोने का भय सताने लगता है। ऐसे में आप अपना मानसिक संतुलन खो बैठते हैं और यह लगाव आप को वस्तुओं के मालिक होने पर भी उन वस्तुओं का गुलाम बना देता है। परन्तु एक वैराग्यवान व्यक्ति हर एक चीज़ का उचित आनन्द तो लेता है पर उसका गुलाम नहीं बनता।

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

कैसी हो हमारी वाणी

महात्मा विदुर ' विदुरनीति' में कहते हैं वयक्ति का अपनी वाणी पर संयम होना चाहिये। मितभा**षी** होना बहुत बड़ा गुण है If speech is silver then silence is gold व्यकित को यह पता होना चाहिये कि कब, कहां क्या बोले और कितना बोले। व्यर्थ का बोलना छिछोरेपन की निशानी है। मितभा**षी** होने के लिये व्यक्ति इन पांच दो**षों** से बचे––वाणी की कटुता, चुगली करना, झूठ बोलना, आप्रासंगित बोलना, बिना आवश्यकता के बोलना

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

Publisher & Printer Bhartendu Sood **Printed at** Umang Printer, Plot No. 26/3, Ind. Area, Phase-II, Chd. 9815628590

Owner Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047

Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

TIME

Prof. S P Puri

Dost thou love life? Then do not squander time, for that is the stuff life is made of. -- Benjamin Franklin

By the street of by and by, one arrives at the house of never. -- Cervantes

While doing a particular job, we judge our success, not by the time we spend in doing it, but by the pleasure we derive.

As students, we count time not by years, months neither by days, hours, minutes or seconds, but by heart throbs.— Ashutosh Mukherjee

It is a common saying that time and tide wait for nobody, so to succeed one has to take the instant by the forward top, said Shakespeare. Catch time by the forelock since it is bald in the rear.

Time is money. We need not be miser or mean with it, but we should be more wary in throwing an hour away than a ten rupee note. Wasting time is waste of energy, waste of vitality, and waste of character in degeneration. It implies the waste of opportunities which may never come back. Our future resides in it and by wasting it in idle gossip, in a way we are killing our future. We live through our deeds and accomplishments and not by figures on a dial. Nature is so democratic in bestowing everyone the same twenty-four hours in a day irrespective of the fact whether one is young or old, literate or illiterate, peasant or prince, a sage or a criminal. Our evolution depends on use we put time to.

Idleness is the sepulcher of the living, so goes a Greek proverb. In the grave, we will have enough rest, so why not put the present moment to optimum use, in our pursuit of success and excellence.

A customer asked the sales clerk, "What is the price of this book?" after having spent an hour dawdling in the front store of Benjamin Franklin's newspaper establishment. One dollar, replied the clerk. The customer started haggling over the price, but the sales clerk told him firmly that the price is one dollar. After a while, the customer enquired whether Mr. Franklin is inside. On being told that he is very much there, the customer wanted to talk to him about the price. Mr. Franklin came out and told him that the price of the book is a dollar and a half now, since he had to leave the work he was engaged in and had to come out. The customer finally purchased the book and paid a dollar and a half and learnt a lesson from the master that time is indeed money.

When Michael Faraday started his career as a book binder, he devoted all his leisure time to experiments and rose to the level of one of the greatest scientists. Once he wrote to a friend, "Time is all I require. Oh, that I could purchase at a cheap rate some of our modern gentlemen's spare hours-nay days."

Alexander Humboldt's days were so occupied with his business that he had to pursue his scientific work either at night or early morning while others slept. He rose to be a great philanthropist.

Heights by great men reached and kept
Were not obtained by sudden flight but
While their companions slept
They were toiling upward in the night
Henry Wadsworth Longfellow

Prof. S. P. Puri, a renowned academician, ex U.G.C. Emeritus Fellow, was Professor and Chairman, Department of Physics, Panjab University, Chandigarh.

पाठकों के पत्र

कमला आर्य, चूही चौक, फिरोजपुर

सम्पादक महोदय,
वैदिक थोटस

मुझे आपकी पत्रिका किसी ने पढ़ने को दी। बहुत ही अच्छी लगी। बिलकुल ठीक बाते लिखी गई है। मेरे पति और मैं शुरू से ही आर्य समाजी हैं। मन्त्र बोलकर हवन भी करते थे । आर्य समाज भी जाते हैं। हमारे दो बेटे और एक बेटी हैं। एक बेटा हैदराबाद में है और एक अमेरीका में । बेटी भी शादी के बाद पूना में रहती है। दोनों बेटों के पास रहने का अवसर मिला और बेटी के पास भी रह कर आई। एक बेटी और एक बेटा सांईं भगत बन गये हैं। दूसरा बेटा किसी खास को नहीं मानता, जहां दिल किया चला जाता हैं मूर्ती पूजा से कोई परहेज नहीं है। खैर इस का भी कोई दुख न होता पर दुख है दोनो लड़के मांस भी खा लेते है, और कभी कभार शराब भी पी लेते हैं। हमने तीनों बच्चों को पास बिठाकर बात की, उनकी बात में दम था।
वे बाले––'' आर्य समाज के नाम पर करते क्या थे––मन्त्र बोल कर हवन या संस्कृत में सन्धया। हम जब तक छोटे थे तो पास में बैठकर स्वाह स्वाह कर लेते पर हमें समझ कुछ न आया। आप पूरा हवन भी कर लें कुछ समझ न आता आप क्या मांग रहे है क्या भगवान को बोल रहे हैं। ऐसे में हम क्या सीखते । इस के सिवा था क्या जो हमें समझ आता।
कुछ बड़े हुये तो जब भी भगवान से कुछ मांगना होता तो दोस्तों सहेलियों के साथ मन्दिर चले जाते व आरती कर लेते। पता लगता कि क्या बोल रहें हें क्या मांग रहे हैं। आगे बोले, ममी जी भगवान की आवश्यकता हमें भी उतनी ही महसूस होती है जितनी की आपको। हमें भी कोई ऐसी शक्ति के सहारे की आवश्यकता मालुम होती है जिसे हम अपना साथी सहारा समझे और अकेला महसूस न करें। पर सच्चाई यह है कि हमने आर्य समाज में कभी महसूस न किया। इसलिये हम दो**षी नहीं हैं।**
मैं समझ गई थी गलती उन की नहीं हैं। हर एक व्यक्ति आसान रास्ता ढूंढता है। हम ही उन्हें ठीक रास्ता नहीं बता पाये । हम से अच्छे तो राधास्वामी वाले ही हैं। मन्त्रों की इस पचड़े में पड़े बिना थोड़े शव्दों में नाम के रूप में बच्चों को कुछ अच्छी बातें बता देते हैं जो वे जीवन भर आचरण में लातें है। मेरे पड़ोस में एक राधास्वामी परिवार है। न तो वे शराब, मांस मछली लेते हैं न ही उनके बच्चे व उनका आगे का परिवार, हालांकि एक विदेश में रहता है।।
सपादक महोदय आपकी बातें विल्कुल ठीक हैं। हमारे वेदों की बातें बहुत अच्छी हैं। पर हम अपने आप को मन्त्रों व हवन तक सीमित रखकर बच्चों को नहीं बता पा रहें। अच्छा हो हम भी दूसरें मतो की तरह अपने बच्चों को साधारण भाषा में और हवन आदि कर्मकाण्ड से हटकर वेदों और आर्य समाज की अच्छी बातें बतायें। तभी संस्था जीवित रहेगी । वरना आर्य समाज का नाम शादी और मरने पर संस्कार करने तक ही रह जायेगा।

आपकी पत्रिका आर्य समाज में सुधार लाने का बहुत ही अच्छा काम कर रही है। आप बधाई के पात्र है।

कमला आर्य

————————

मुझे अव बहुत से फोन आते हैं जो कि मेरी बातों का अनुमोदन करतें है। आज यह एक गम्भीर विषय है कि हम आर्य समाजियों के बच्चे बड़े होने पर आर्य समाजी क्यों नहीं रहते। क्या यह विडम्बना नहीं कि राधास्वामी के बच्चे राधास्वामी हैं, नामधारी के बच्चे नामधारी हैं पर आर्य समाज के बच्चे आर्य समाजी नहीं। कारण स्वार्थी तत्वों की बातों में आकर हम आर्य समाज में जो परोस रहें हैं वह आज हमारे बच्चे स्वीकार नहीं करेंगे। साल में एक बार हवन करवा लिया उससे कोइ आर्य समाजी नहीं बन जाता। यह हवन, संस्कृत और गुरूकलों की शिक्षा पधति को कोई 21 वीं सदी का व्यक्ति या हमारे बच्चे स्वीकार नहीं करेगा। पर गलती हम आर्य समाजीयों की है। हमारे आर्य समाज के नियम इतने अच्छे हैं, उनको समझने के लिये कोई खास भाषा नहीं सीखनी पडती, उनका तो हम नाम नहीं लेते और उन पण्डितों की बातों में आकर हवन संस्कृत के पचड़े में पड़े रहते है। परिणाम सब के सामने हैं।
गुरूकुल वालों को अपना काम करने दें, संस्कुत वालों को अपना, हम अपना करें। हमने तो खुद को भूल कर

अपने को इन संस्थाओं के हवाले कर दिया है। गुरूकुल विद्यालय है, आर्य समाज नहीं। संस्कुत भाषा है, आर्य समाज नहीं। न ही आर्य समाज भारतीय जनता पार्टी, विश्व हिन्दु परिषद या राष्टीय स्वयं सेवक संघ है। ये सब आर्य समाज को हड़पने में लगें है, इन्हाने आर्य समाज कां खत्म कर दिया है।

अच्छा हो जो पढ़े लिखे आर्य समाजी हैं इस बात को समझें। हम अपने बच्चों को अन्छी बातें और अच्छा आचरण अपनी भाषा में बतायें। उदाहरण के लिये उन्हं बताये ईश्वर एक है और अजन्मा और निराकार है ताकी वे आज के बाबों आदि के चक्कर में न पढें। वच्चों को अन्धविश्वासों से मुक्त करें। उन्हे शपथ दिलायें कि वे मांस, शराब और नशे का प्रयोग नहीं करेंगें। उन्हें रोज ईश्वर प्रार्थना व अव्छे सहित्य पढ़ने की आदत डाले। उन्हे दया परोपकार व सेवा का महत्व बतायें और जीवन में लाने के लिये प्रेरित करते रहें। अगर आपने इतना कर लिया और आपके बच्चे ने धारण कर लिया तो आर्य समाजी बन गया। संस्कृत में मन्त्र बोलना या हवन करना आर्य समाजी बनने के लिये कोई आवश्यक नहीं।

सम्पादक

यह जो हम आर्य समाज के नाम पर परोस रहें हैं, हमारे बच्चे स्वीकार नहीं करेंगे। यह परोसने वाले भी जानतें हैं पर उनकी कमाई का साधन बन गया है। गुरूकुलों को दान देना, प्रशंसा के पुल बांधना तो आसान है बात तब है जब ये लोग अपना बच्चा गुरूकुल में भेजें। जब आप नहीं भेजते तो दूसरों को शिक्षा क्यों देते हो, और गरीब बच्चो पर क्यों थोपी जाये? उन्हें भी हमारे वच्चों की तरह अच्छी परिपूर्ण शिक्षा का अधिकार है।

Confusion indeed but then you have to decide as parents

(1)Whether to send Kids to set up a Tea stall & become like Modi...

Or

Send them to IIT & become like Kejriwal... 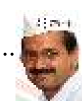

Or

Go Abroad & do nothing to become like Rahul Gandhi..

!!! Tough Decision !!!

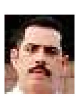 If you follow the right woman, you become... Robert Vadra

If you follow the wrong woman, you become... Vijay Mallya

If you follow many woman, you remain... a Bachelor (Salman Khan)

If you don't follow a woman, you become... Narendra Modi

Choose your type...

Do not follow a woman **silently**... Else you become... Manmohan Singh !!

Issued in men's interest

प्यार करना सीखें

डॉ. महेश पोरवाल

यह मानव का जीवन बहुत मुश्किल से मिलता है। इसे जीने के आपके पास दो ढंग है। पहला––अधिक से अधिक मित्र बनायें। और दूसरा, अपनों को दूसरों से अलग थलग कर लें।

अपने को अलग थलग करना मुश्किल नहीं , बहुत आसान है। आप को स्वार्थी बनना है। हर एक के प्रति रोष, घृणा, अविश्वास, संदेह और तंगदिली। परन्तु अगर आप ने मित्र बनाने हैं तो आपका रास्ता थोड़ा मुश्किल है। सब से पहले आप को दूसरों से प्यार करना आना चाहिये। यह दूसरे और कोइ नहीं, दैनिक जीवन में आपके सम्पर्क में आने वाले लोग हैं। इस में कड़वी सच्चाई यह है कि अमेरिका में रहते हुये व्यक्ति से या जिन्हें हम कभी ही मिलते हैं, उन से प्यार करना या प्यार का संवाग करना बहुत आसान है। बात तब है जब हम अपने पड़ोसी से या रोज समपर्क में आने वालों से भी प्यार करें। इस की कूंजी है––उदारचित होना(**to be generous**), उदारचित का सीधा अर्थ कि हम उनकी गलतियों को, उनकी ऐसी बातों को जो हमें अच्छी न लगे, क्षमा कर सकें, भूला सके और बहुत बार अनदेखा कर सकें, साथ ही आवश्यकता है सहनशीलता और धैर्य की। आप को दूसरों से प्यार की अपेक्षा नहीं करनी, पर स्वयं दूसरों को प्यार देना है।

पड़ोसी या फिर आपका काम में दल का सदस्य, कभी भी आपकी मर्जी का नहीं हो सकता। बड़ी हद आप अपना किरायेदार अपनी मर्जी का ला सकते हैं, पर इस से अधिक नहीं। ऐसे में अपने पड़ोसी या फिर दल के सदस्य के साथ प्यार करना बहुत बड़ी चुनोती है। अगर आप इस चुनौती में सफल हैं तो अवश्य ही आप मानव हैं और तब आपको मित्रों की कमी नहीं होगीं।

भगवान से प्यार करना तो आसान है पर मजा तब है जब उस ईश्वर के बन्दों से प्यार करें। आप सब ने एक कहानी सुनी होगी। एक भक्त थे, बड़े प्रेम से ईश्वर को याद करते थे। एक दिन एक देवदूत आया, उसके पास नामों की दो सूचीयां थी। एक सूची में उनके नाम थे जो कि भगवान को प्यार करते थे। दूसरी सूची उन लोगों की थी, जिन्हे भगवान प्यार करता है। भक्त ने देवदूत से पूछा कि क्या उस का नाम पहली सूची में है? देवदूत ने कहा कि आप का नाम सूची में सब से उपर है। प्रसन्न होकर उसने फिर पूछा क्या दूसरी सूची में भी उसका नाम सब से उपर है? वह यह जानकर वहुत हैरान हुआ जब देवदूत ने बताया कि दुसरी सूची में उसका नाम बहुत नीचे था और उसके अमुक पड़ोसी का सब से उपर था। भक्त ने आश्चर्य के साथ कहा ––'' किन्तु वह तो भगवान का नाम लेता ही नहीं है। मैने उसे कभी संध्या, पूजा, भजन, किर्तन करते हुए नहीं देखा। हां, वह दूसरों की सहायता करने, दूसरों के काम करने, बीमारों

गरीबों और दुखियों की सेवा करने में लगा रहता है।''

देवदूत ने कहा——'' यही कारण है कि भगवान उसे सब से अधिक प्यार करते हैं। जो भगवान के बन्दों को चाहता है, भगवान भी उसे चाहते हैं।

प्यार कूंए के पानी की तरह है। कूंए में से जब पानी निकालते हैं उतना ही या उस से भी अधिक नया पानी कूंए में और आ जाता है। जितना आप प्यार बांटेंगे अतना ही प्यार का खजाना आप के अन्दर बड़ता जायेगा। यह खजाना भौतिक पदार्थों की तरह कम नहीं होता। अगर कूंए का पानी निकाला न जाये तो पानी सढ़ने लगता है, यही हाल **मनुष्य का** है जब वह प्यार बांटने के मामले में कजूंस हो जाता है तो उस का हाल भी सढ़े पानी की तरह ही हो जाता है। अधिक तर आप को वे व्यक्ति जीवन से हताश व उदास मिलेंगे जो प्यार बांटने की कला को भूल चुके होते हैं या फिर जिन्होने अपना प्यार कुछ चुनंदा व्यक्तियों के लिये ही रखा होता हैं। याद रखें प्यार उसी को मिलता है जो प्यार देना जानता है। जो प्यार देना नहीं जानता व सदा पाने की इच्छा रखता है वह सब कुछ होने के बावजूद भी दुखी रहता है।

मोह व ईष्या प्यार के सब से बड़े दुश्मन है। प्यार मनुष्य के जीने के लिये उतना ही आवश्यक है जितना कि वायु और जल। परन्तु मनुष्य अज्ञानवश यही चाहता है कि उसे लोग प्यार करें जब कि जरूरी यह है कि वह प्यार दूसरों को दे। जब हम दूसरों को प्यार देना शुरू करेंगे तो हमें प्यार स्वयं मिलना शुरू हो जायेगा पर हमारा प्यार निस्वार्थ होना चाहिये। यदि हमारा स्वार्थ से भरपूर है तो यह स्वभाविक क्रिया सम्भव नहीं होगी।

कहते हैं सब गुण एक तरफ और प्रेम का गुण एक तरफ। यदि हम यह गुण अपना लें , तो इस हृदय में आत्मा के साथ परमात्मा का स्वरूप साफ दिखाई देगा। जब प्रेम की दृष्टि बढ़ेगी जो घृणा नफरत स्वयं खत्म हो जायेगी।

गुण अवगुण तो हर मानव में मिलजुल कर बसते है। यदि अपनत्व पैदा करना है तो दूसरों के अवगुणों को नज़र अन्दाज़ करके, उसके गुणों की प्रशंसा करनी होगी, तभी प्रेम को स्थान मिलेगा। जैसे गाय अपने बछड़े की तरफ बड़ती है वैसे ही आप अगर अपने आस पास के लोगों की तरफ बड़े तो सभी **द्वेष दूर हो सकते हैं और आपस में प्रेम पैदा होता है। प्रेम बिल्कुल निष्कपट, निःस्वार्थ भाव से पूर्ण समर्पण के साथ करना चाहिए । प्रेम में कभी कहीं कोई स्वार्थ की भावना, शर्त वा पूर्वाग्रह नहीं हो सकता क्योंकि प्रेम कोई व्यापार या विनिमय की वस्तु नहीं है । प्रेम करने के लिए 'मैं' और 'मेरे'की भावना समाप्त करके 'हम' और 'हमारे' की भावना उत्पन्न करें । प्रेम लौकिक और पारलौकिक सफलता प्राप्ति का उत्तम साधन है ।**

किसी शायर ने बहुत सुन्दर कहा है

सदियों के फासले लम्हों में मिट सकते हैं
हाथ मिलाने वाले अगर दिलों को मिलां लें

संत कबीर ने भी बड़े सुंदर शब्दों में कहा

जा घट प्रेम न संचरै , सो घट जान मसान ।
जैसे खाल लुहार की , सांस लेत बिन प्राण ।।

अर्थात जिसके मन में प्रेम की हिलोरे नहीं उठती वह मृतक के समान है । इस अढाई अक्षर के इस यौगिक अर्थ वाले शब्द 'प्रेम' में सारे विश्व को, सारे प्राणीजगत को एक दूसरे के पास लाने की श्शक्ति है। इसलिए हमें चाहिए कि **हम द्वेष, घृणा, ईर्ष्या, जलन, शत्रुता** एवं दूसरों को अपमानित करने के भावों को अपने मन से निकाल दें और सभी में ईश्वर के दर्शन करते हुए सभी से प्रेम पूर्वक व्यवहार करके सबकी सेवा आदर मान सम्मान करें ।
'ऋग्वेद में कहा है

सं गच्छध्वं सं वदध्व्र संवो मनांसि जानतामं।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाम उपासते

ऐ ऐश्वर्य के अभिलाषी मनुष्यो ! तुम आपस में मिलकर चलो, मिलकर रहो, प्रेम से बातचीत करो, तुम एक दूसरे से मन मिलाकर ज्ञान प्राप्त करो। जिस प्रकार हमारे पूर्वज विद्वान एक दूसरे से अनेक प्रकार का ज्ञान प्राप्त करते हुए ऐश्वर्य और उन्नति प्राप्त करते थे, वैसे ही तुम भी करो।

इसीलिए आईये प्रेम के जादू को समझें और अपने मन को उदारचित बनाकर इसें प्रेम का कूआं बनायें जिसमें सब के लिये प्रेम रूपी पानी हो। प्रेम कर के देखिये आप कम खाने पीने में भी अधिक हृष्ट पुष्ट महसूस करेंगे। अगर किसी रोग की दवाई खाते हैं तो दवाई की मात्रा कम हो जायेगी।

अनेकता में एकता की वास्तविकता

अम्बाराम सिद्धान्त शास्त्री

अनेक मत, मजहब, पंथ के मानने वाले लोग अगर यह कहें कि अनेकता में एकता ही भारत देश की खूबी है तो यह एक असत्य भाषण व नारा लगता है। अनेक मत, मजहब पंथ होने का मतलब है सबके अलग–अलग विचारधाराओं तथा मान्यताओं का होना। जब प्रत्येक मनुष्य की विचारधारा व मान्यता एक न होकर अलग–अलग हों तो मनुष्यों में एकता कैसे हो सकती है तथा अनेकता में एकता का नारा कैसा? भारत केवल नारों का देश होता जा रहा है। नारों में और जमीनी हकीकत में कोई समानता नहीं दिखाई दे रही है। यही एक कारण है कि हमारे देश को चाहे स्वतंत्र हुए 67 **वर्ष** बीत चुके हैं फिर भी हमें एकता के दर्शन नही हो सके हैं।

यदि अलग–अलग मत, मजहब और पंथ में एकता का सूत्रपात होना सम्भव होता तो इतने मत, मजहब और पंथ बनते ही क्यों? अलग–अलग मत, मजहब और पंथ बनने का सीधा सा अर्थ है उनकी मान्यताऐं और विचारधाराऐं अलग–अलग हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि अनेंक मत, मजहब, पंथ बनाने में उनका अपना स्वार्थ भी इसमें निहित होता है। यदि इनमें एकता ही होती तो न भारत का विघटन होता और संसार भी कई तथाकथित धर्मों में बंटा न होता। आज पूरा संसार एक मानव जाति होते हुये भी आतंकवाद, नस्लवाद इत्यादि अनेक वादों से जूझ रहा है। इतना सब अनेकता में एकता के कारण नही अपितु अनेकता में अनेकता के कारण ही हो रहा है। श्शरीरों में समानता होने से काम नहीं चलता जबतक विचारों में समानता न हो। क्योंकि श्शरीर जड़ है वह अपने आप कुछ भी करने में समर्थ नहीं है जबतक उसमें चेतन या आत्मा का निवास न हो। विचारों में असमानता के कारण पुत्र पिता की अनदेखी करता है, भाई भाई का दुश्मन बन जाता है। समाज में विकृति आती है तथा अराजकता, लूटपाट, हत्याऐं, बलात्कार अमानवी कर्म होते हैं। मैं तो कहता हूँ कि सभी प्राणियों को जिसमें मनुश्य सबसे श्रेश्ठ माना गया है सबको ईश्वर ने पैदा किया है। ईश्वर की बनाई हुई चींज से घृणा करना ईश्वर से घृणा करने के बराबर है साथ ही यह भी समझना चाहिए जब परमात्मा सर्वव्यापक है तो जिस व्यक्ति से घृणा करते हैं उसमें भी परमात्मा व्यापक है। इसलिए किसी व्यक्ति को अपने से नीच और उससे घृणा करना पाप है। ऐसे व्यक्तियों के ऊपर प्रभु की कृपा नहीं होती चाहे वह किसी भी मत,मजहब और पंथ का मानने वाला हो। यदि हम प्रत्येक प्राणी को प्रभु के निवास स्थान के रूप में देखने लगें तब तो आदर व प्रेम की भावना जाग उठे।

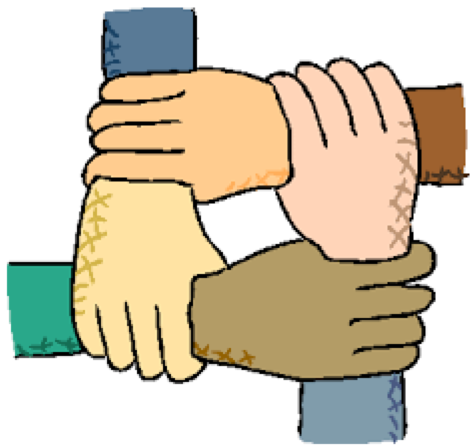

जबतक मानवसमाज वैदिक मान्यताओं तथा वैदिक धर्म के अनुकूल और अपने महान् ऋशियों की परम्पराऐं नहीं वर्तेगा तबतक एकता के दर्शन नहीं हो सकते क्योंकि इसी में मानवतावादी दृश्टिकोण विद्यमान् हैं। इसमें मैं यह भी स्पश्ट करना उचित समझता हूँ, महर्शि स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज ने कहा कि सब एक वैदिक धर्म में प्रवृत हों, सबकी पूजा पद्धति एक हो, समाज की रचना जन्म के आधार पर न होकर कर्म के आधार पर होनी चाहिए यदि आज का समाज इन बातों को आत्मसात कर ले तो मैं डंके की चोट पर कह सकता हूँ कि निश्चय ही अनेकता में एकता स्थापित हो जायेगी।

जितने भी मत, मजहब व पंथ के मानने वाले हैं उनका कहना होता है कि राह कोई भी हो किसी भी पंथ मजहब का मानने वाला हो परन्तु सबका उद्देश्य एक ही है। सबके साथ प्रेम, सहानुभूति रखना तथा परमात्मा की आराधना उपासना करना और उसे प्राप्त करना है। भले ही सुनने में यह अच्छा लगता हो परन्तु धरातल पर वास्तविकता इससे कोसों दूर है। लक्ष्य भले ही परमात्मा प्राप्ति का बताया जाता है परन्तु इससे ईश्वर प्राप्ति नहीं हो सकती। ईश्वर प्राप्ति तो केवल वेदमार्ग पर चलकर ही हो सकती है। क्योकि परमात्मा का स्वरूप, लक्षण इत्यादि वेद द्वारा ही जाना जा सकता है। वेद भगवान् भी यही घोशणा करते हैं कि **नान्यपंथा विद्यतेऽयनाय** अर्थात् वेद मार्ग के अलावा अन्य कोई भी मार्ग ईश्वर प्राप्ति का है ही नहीं। कुछ लोगों में यह भ्रम है कि परमात्मा साक्षात् रूप में उसके सामने प्रकट होगा और कहेगा मैं परमात्मा हूँ। मैं तेरी भक्ति पर खुश हुआ और जो चाहे सो मांग ले। जैसे दंत कथाओं में भी ऐसी बातें सुनने को मिलती हैं। देखिए! ईश्वर की प्राप्ति का मतलब यही है कि यदि हमारे अन्दर परोपकार की भावना उमड़ जाये, असहाय की सहायता करने के लिए हाथ आगे बढ़ने लग जायें, दुर्व्यसनों का त्याग हो जाये, किसी भी प्राणी को सताना पाप समझने लग जाये, स्त्री जाति का आदर सम्मान करने की भावना पैदा हो जाये, अपनी आत्मा के सदृश दूसरे को भी समझने और मानने लग जायें अर्थात् किसी भी प्राणी मात्र को

हेय दृश्टि से न देखे और न कश्ट देवे, सबके प्रति प्रेम का व्यवहार करने लग जाये, यह बात समझ में आ जाये तो समझो कि परमात्मा की प्राप्ति हो गई।

हम यहाँ एक घटनाक्रम से यह प्रत्यक्ष कराने का प्रयत्न करते हैं कि क्या कोई किसी भी मत, पंथ और मजहब का मानने वाला व्यक्ति परमात्मा को प्राप्त कर सकता है। घटनाक्रम इस प्रकार से है कि एक बार मैं अपने संस्थान के एक चौराहे पर खड़ा था। धूप चमक रही थी। कुछ लोग पक्की सड़क जो संस्थान ने बनाई थी उससे अपने–अपने कार्यस्थल की ओर जा रहे थे जिस ओर धूप अधिक चमक रही थी और कुछ लोग एक कच्चे रास्ते से कार्यस्थल की ओर जा रहे थे उस रास्ते में वृक्षों की छाया थी। उस समय मैं यहीं सोच रहा था कि चाहे कर्मचारी किसी भी रास्ते का इस्तेमाल कर रहे हैं आखिर पहुँच तो फैक्ट्री के अन्दर अपने शॉप में ही हैं अर्थात् अपने कार्यस्थल में पहुँच रहे हैं। पहले तो मेरे मन में आया कि लोग ठीक ही कहते हैं कि अलग–अलग मत, मजहब और पंथ के मानने वाले भी ईश्वर को प्राप्त कर सकते हैं। भले ही रास्ता भिन्न–भिन्न क्यों न हों। फिर भी दिल ने यह नहीं माना और शंका बनी रही कि वैदिक मार्ग को न अपनाकर अलग–अलग मत, मजहब और पंथ के मानने वाले लोग क्या ईश्वर की प्राप्ति कर सकते है। यदि ऐसा है तो परमात्मा द्वारा बताया गया वेदमार्ग का क्या औचित्य रह जायेगा। जब गम्भीरता से इस पर विचार किया तो तब बात समझ में आ गई और समाधान हो गया। समाधान यह हुआ कि भले ही लोग अलग–अलग रास्ते से अपने–अपने कार्यस्थल में जा रहे थे परन्तु जब कार्यस्थल के अन्दर जाना होता है तो संस्थान द्वारा बनाये गये मार्ग पर चलकर ही कार्यस्थल के अन्दर जाना हो सकता है चाहे सीढ़ियाँ चढ़कर जाना हो या फिर सीधा पक्का रास्ते से हो। परन्तु किसी भी अन्य मार्ग से कार्यस्थल में प्रवेश कदापि नही हो सकता। यदि कोई अन्य मार्ग अथवा खिडकी आदि से जाना चाहे तो नहीं जा सकता यदि जायेगा तो उस पर अनुशासनहीनता की कार्रवाई की जा सकती है। जिस प्रकार संस्थान का कर्मचारी अपने कार्यस्थल में संस्थान द्वारा बनाये गये मार्ग को अपनाये बिना अपने कार्यस्थल में नहीं पहुँच सकता उसी प्रकार हम बिना वेद मार्ग अपनाये परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकते। इससे स्पश्ट है जो भी ईश्वर को प्राप्त करना चाहता है उसे परमात्मा की पवित्र वेदवाणी को अपनाना होगा। इसीलिए वेद स्वयं कहता है **नान्यापंथाः विद्यतेऽनाय** अर्थात् ईश्वर प्राप्ति के लिए वेदमार्ग के अलावा कोई अन्य मार्ग है ही नहीं।

प्रश्न यह भी है कि वेद मार्ग पर चला कैसे जाय? इसका समाधान इस प्रकार है कि हमें अपने पूर्वज श्रद्धेय ऋशियों को स्मरण करना होगा उनके द्वारा रचित उपनिशदों, दर्शन शास्त्रों, ब्राह्मण ग्रन्थों इत्यादि का स्वाध्याय करना होगा। भगवान् पतंजलि द्वारा रचित योगदर्शनम् के अनुसार अपना आचरण बनाना होगा उसके बाद वेद का स्वाध्याय करना होगा। वेद को समझने से पहले उपनिशद आदि ग्रंथों का अध्ययन कर लिया जायेगा तो वेद की बात आसानी से समझ में आ सकेगी क्योंकि उपनिशद् ज्ञान से सत्य के स्वरूप पर आये हुए आवरण का नाश हो जाता है और हम सत्य को ठीक रूप में देख पाते हैं। यदि और भी शंकाऐं मन में व्याप्त हों तो आज ही से अभी से महर्शि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित ग्रंथों का अध्ययन प्रारम्भ कर देना चाहिए, जो इस प्रकार हैं विश्व प्रसिद्ध सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाश्य भूमिका, आर्याभिविनय, आर्योद्देश्यरत्नमाला, संस्काविधि इत्यादि। प्रारम्भ से लेकर अन्ततक अध्ययन करने से मन में उपस्थित सारे शंकाओं और भ्रान्तियों का निराकरण हो जायेगा तथा दूशित विचारों और समस्त भ्रान्तियों का बांध टूटकर बह जायेगा और पवित्र सरोवर मन में भर जायेगा तथा हमारी विचारधाराऐं और मान्यताऐं एवं पूजा पद्धति एक हो जायेगी जिससे मनुश्य मात्र को ही नहीं अपितु हम सभी प्राणियों को मित्र की दृश्टि से देखने लग जायेंगे और अनेक शरीर और आत्माऐं होते हुए भी हम एक हैं यह भातृभाव मन में उत्पन्न हो जायेगा और जो हमारे बीच की आपस की खींचातानी, बैरभाव, अपने–अपने स्वार्थ के लिए बनाये गये मत, मजहब, पंथों से छुटकारा पा सकेंगे। मित्रभाव से रहते हुये तभी हम ईश्वर को भी प्राप्त कर सकेंगे।

वेद सदन, महर्शि दयानन्द मार्ग, हिम्मतपुर मल्ला, हरिपुर नायक, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखण्ड, मो0 ९५५७००४७६४

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डाबर, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगडी, कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :

HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines
Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh
Tel.: 0172-2708497

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म्।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

महार्षिदयानन्द ओल्ड एज होम का उद्घाटन श्रीमती परतिमा देवी पत्नी श्री लंगिराज महापातरा चीफ जनरल मनेजर स्टेट बैंक ऑफ इंडिया द्वारा किया गया, महार्षिदयानन्द ओलड एज होम मे वृध माता के रहने का प्रबंध किया जा रहा है।

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है् :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

योगिंदर पाल कौड़ा, **नरेन्द्र गुप्ता** **लेखराम (+91 7589219746)**

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

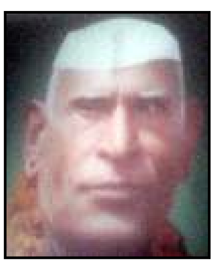

Late Sh. Manohar Lal

Raj Rani Kapoor

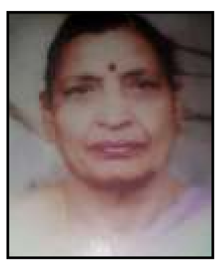

Late Smt. Sudesh Devi

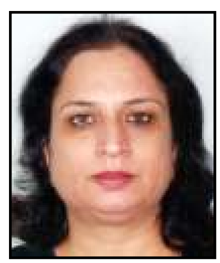

Seema Bakshi

Late Smt Santosh Chauhan

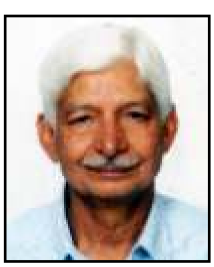

R. D. Rishi

Sauham Chakra

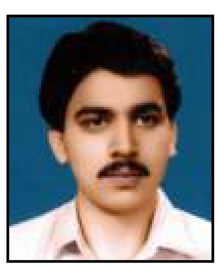

Atul Mahajan

Pooja Verma

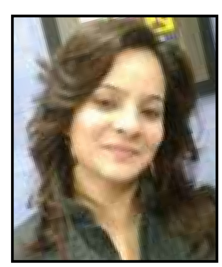

Monica Verma

RNI NO. CHABIL/2012/47744 POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2013-2015

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years
in service

DIPLAST
PLASTICS LIMITED
AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870